

* शिक्षनका स्तरों विभिन्न लर्निंगस्टेप्स (Stages of Teaching) अनुसृत करें।

शिक्षनका स्तरों अधिकार लाभिचालक इस प्रवेश-
 शिक्षक के अनुनिते शिक्षनका स्तरों पूर्व, अनुनिते शिक्षन-
 कार्य चलाकाणीन् अव, अनुनिकार्ये शिक्षनकार्ये लर्निंग-
 कार्यस्टेप्स सुझावान्निते लाभिकाल्लगा जाननन करते हुय-
 एव, सुचाकार्ये डाके कार्ये जाविनते करते हुय,
 सुरुजन्ने शिक्षनकार्यके लर्निंग-प्रोतिक इत्यादि ओवल्यक,
 अव लर्निंगस्टेप्स छावार समय-शिक्षन जानिया जान्नते
 लूग विवरण लाओया थाए, जैक्सन (Jacson) अव म-
 शिक्षनकार्यके अनुनिते लर्निंग विभिन्न करदेहेन —

- (i) प्राक-अधिकार लर्निंग (Pre-active Stage)
- (ii) अधिकार लर्निंग (Interactive Stage)
- (iii) अधिकार लर्निंग (Post-active Stage)

• प्राक-अधिकार लर्निंग :

अहे अनुनिते शिक्षनकार्ये लाभिकाल्लगा नुस्खा, लूचलाचन अनुभव पूर्वे शिक्षक के आवतीय लाभि-
 काल्लगा जान्नन करते हुय, अहे लर्निंग शिक्षक के मृलत
 पूर्ववन्ने व कार्य करते हुय, याए-लाल्या निर्धार्यन उ
 न्नित उत्तराने उन्नी सहजव्य उलाघ निर्धार्यन,

(a) लाल्या निर्धार्यन : अहे लर्निंग शिक्षक के प्राक्किर्णि-
 तेवे लाल्या चिन्ह करते हुय,

लाल्या चिन्ह एव लाभ विक्रान्तवित्तेवे निर्धार्य शिक्षन
 उद्देश्य एव निर्देशनावृत्तिक उद्देश्य चिन्ह एव एवते हुय,
 अवलाभ उद्देश्यावृत्तिक अथावह उलाघ ओवल्यगत
 लाभे विन्युस्त करे लिधित काल द्विते हुय।

लाल्या निर्धार्यन

शिक्षन वा निर्देशकावृत्तिक उद्देश्य
 चिन्हाकरण

उद्देश्यावृत्तिक अवलाभ लाभे विन्युक्तव्य

(b) लक्ष्य अर्जनवाच सम्भाव्य उल्लंघन निर्धारणः कीड़ावे
लूप्तनिर्धारित

उद्देश्यात्मक उल्लंघन करने के लिए शिक्षार्थीय अर्जन का
लविष्टन करा जाए और विषय-सिद्धान्त अध्ययन
अर्जुन लर्नायन प्रिंटीन् करें। ऐसे विषय-सिद्धान्त
लविष्टकल्पना अध्ययन करते हुए तो हल्ले —

- i) शिखन उद्देश्यात्मक लिफे अर्जन कराव और न्यूज़
शिखन अनियुक्ति अर्जनवाच उल्लंघन का
विषयवस्तु निर्धारित।
- ii) मनोविज्ञान सम्भाव्य उल्लंघन ओ प्रौढ़िलिंग-
लक्षिति एवं एकाकीकरण अनुभावी विषयवस्तु
विन्यास।
- iii) शिक्षण तात्त्विक, कोशल ओ शिक्षणवाच नीति
निर्धारण।
- iv) शिक्षण-कोशल ओ तात्त्विक अव्याप्ति उल्लंघन
शिक्षा सम्भाव्यक उल्लंघन (Teaching aids)
प्रयोगवाच लविष्टकल्पना अध्ययन।
- v) शिक्षण शिक्षणवाच उल्लंघन समाधि, स्थल,
लविष्टकल्पना आदि-लविष्टकल्पना निर्धारण।
- vi) अध्यात्म वृत्तियायन कार्यन करावेन ओ कीड़ावे
कार्यवेन तावृ लविष्टकल्पना अध्ययन।

● इनियुताव-लर्नायनः

शिक्षणवाच अर्जुन लर्नायन इल आक-इनियुता
लर्नायन एवा आवतीय लविष्टकल्पनाव प्रयोगवाचिक लक्ष्यान्वय
लर्नायन। शिक्षणवाच अर्जुन प्रिंटीन् लर्नायनात्मक अनुत्तम ज्ञान-
शिक्षण लर्नायन छिडाए विष्टेचना करा है। अनुत्तम ज्ञानशिक्षणम्
-आवहन्ति एव प्रयोगिता नीति वाचे शिक्षक ओ शिक्षार्थीव
लविष्टकल्पना विज्ञान-अतिरिक्तावृ प्रान्तिक रासायन-उपर्युक्त।

अग्रे लर्नाचर्य द्वारा कल्पित उत्तर है, जो इस -

(a) विषयनागति (Perception) : किसीका व्यक्तिकाम्हे

तिनि व्यक्तिकाम्हे अविषेषज्ञानात्मक विषयनागति करवाएन। व्यक्तिकाम्हे आपात् अत्यक्त करें शिक्षार्थी-
द्वारा चिह्नित करवाएन अवृ भावेय आचरणात् देखिये जान्नके विवरा गति करवाएन, प्रचारात् भावेय औषधा (motivation) प्रती आवृ ता व्यापार एवं कर्मजो

(b) लावहनितावृ लक्षन निर्णय (Diagnosis) : शिक्षार्थीवृ द्वारा,
आपृ भावात्

शिक्षणीय विषयवृ व्युवर्जितान ज्ञाति भ्रान्ति-व्याविधिये
किसीका किसीतीवृ लावहनितावृ ज्ञाति निर्णयवृ द्वारा
करवाएन। लावहनितावृ लक्षन निर्णयवृ काफ्हरि लिख
जावे करा थाते लाये, अत्यन्त शिक्षक शिक्षार्थीते
अक्षु करते लावहन ता कोन आचरणात् काढेय
स्थानात् सुन्दि करवृ लावहन।

(c) विद्या-ज्ञाति विद्या (Interaction) : व्यक्तिकाम्हे किसीक-
शिक्षार्थीवृ सुन्दरते

केंद्रीय तुलिका लालान करवे विद्या-ज्ञातिविद्या अप्पिया,
किसीने वृ सामाज्य-निये करवे विद्यक-शिक्षार्थीवृ विद्या-
ज्ञातिविद्यावृ उल्लेख, अत्यन्त विद्यक ज्ञाति उल्लेख विवरण
वृ विद्यावृ करवाएन, लूनः विद्यावृ अन्य विद्यावृ विद्यक
लक्षिते-विद्यावृ करवाएन अवृ विद्यार्थीते विद्यावृ विद्यावृ
विद्यावृ विद्यावृ विद्यावृ विद्यावृ विद्यावृ विद्यावृ विद्यावृ
लालान-ज्ञाति उलाल अलूल विद्यावृ विद्यावृ।

• अक्षियता लर्नाचर्य लर्नाचर्य:

- किसीने वृ अलूल लर्नाचर्य वृ लर्नाचर्य
लर्नाचर्य वृ अलूल ज्ञाति विद्या, अक्षियता लर्नाचर्य-किसीक-
शिक्षार्थीवृ विद्या-ज्ञाति विद्या विद्यावृ विद्यावृ विद्यावृ

कठश्चनि हृष्टेत्रे तो विश्वस्तेन व मविद्म चूल्य आद्योऽपि
 कवा हृष्टं प्राप्तं लर्णाये । शिष्ठनेव पूर्वनिर्वित्तिं उद्देश्य
 इति- शिष्ठार्थात् कठोरं अर्थं एवते उल्लेष्टे तो
 ज्ञानाव एत्यु जातिक चूल्यावान एतोऽनि निर्वाचनं ओ की
 विवादेव विष्टव्याक एत्यु अर्थात् तो लिंगं कवेन
 अहं लर्णाये ।

अथित्यु तो लर्णवी लर्णाये व साहें थु-उत्ति शिष्ठते
 काम्प्ति इति —

(a) शिष्ठनेर कार्यकारीता विचारः : शिष्ठने पूर्वनिर्वाचित
 उद्देश्य उल्लिख

उल्लेष्टिगता निर्वाच- कवा ओ शिष्ठार्थाव- अर्थात्
 लविर्वर्तनेर मासा निर्वाच कवे शिष्ठनेव कार्य-
 कारीता विवाद- कवा हृष्टं । अर्णुआव उल्लिखते-
 शिष्ठनकार्यव- उल्लिखिकवन वा लविर्वर्तनेर शिष्ठात्
 अस्ति कवा हृष्टं ।

(b) याहार्वता- विचार- कवा : विश्ववस्तु- निर्वाचन अथवापि
 किमा, विश्ववस्तुव विश्वामि

याहार्व- किमा तो विचार- कवा हृष्टं अहं (यद्यु लर्णाये)
 प्रश्नवाय शिष्ठन एत्यु अर्थात् ना लर्णवी नविश्वाय-
 लाहु उल्लिख कवा हृष्टे ज्ञेविष्टये- जिन्हात् श्रीत-
 हृष्टं अहं- लर्णाये ।

(c) लान्ति ओ एतोऽनेव उल्लभागिता विचारः : शिष्ठने
 लान्ति,

शिष्ठन वेगजाल, शिष्ठा याहाम् क उल्लक्षणं लान्ति इति-
 उल्लभागिता विचार- कवे- लान्ति, लोऽन्तल (३)
 उल्लक्षणेर अविष्टन वा उल्लिखिष्टनेर जिन्हात्
 हृषीत हृष्टा ।

(d) - ज्ञानि लाभिषेकेय छुटिका घृण्यामुळे क्षिक्षार्थीय आधार

लाभिषेकात्मक एवं अतिरिक्त शिक्षावाचक ज्ञानि लाभिषेकात्मक एवं अतिरिक्त शिक्षावाचक छुटिका घृण्यामुळे क्षिक्षार्थीय आधार

क्षिक्षानेय अर्थे तिक्टोडी लार्याय (Stage)

"लाभिषेक" लाभिषेक संस्थें संस्था किंवा, क्षिक्षान कार्य क्षेत्रमध्ये ज्ञानिकांके क्षिक्षक - क्षिक्षार्थीय शिक्षा अतिक्षियातेह- सामग्री हस्त ना, क्षिक्षकेव ज्ञानिकांके अवेक्षण वह प्राप्त असेहे क्षेत्र क्षिक्षक - क्षिक्षार्थीय शिक्षा अतिक्षियाय लाभेत्ते अवशिष्ट क्षिक्षकेव ज्ञानिकांके लाभिषेकात्मक लाभिषेकात्मक अवशिष्ट क्षिक्षकेव असेहे क्षिक्षार्थीय चलाते असेहे क्षिक्षकेव।

— o —

Susanta Baral
 12/04/2020.